-: चतुर्थ अध्याय :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में देशकाल तथा वातावरण

चतुर्थ अध्याय

"'गुनाहों का देवता' उपन्यास में देश-काल तथा वातावरण"

देश-काल का स्वरुप -

देश-काल तथा वातावरण उपन्यास का चौथा महत्वपूर्ण तत्व है। उपन्यास की कथा को सत्य रूप देने के लिए उसे सजीव बनाने के लिए वातावरण की सृष्टि उपन्यासकार के लिए अनिवार्य है। व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण का बहुत-कुछ हाथ होता है। "उपन्यास की विविध घटनाओं, उसके विविध पात्रों तथा उनके कार्यकलाप के साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं को एक पाठक तब सम्भवित या किसी सीमातक यथार्थ समझाता है, जब वह यह देखें कि, उसकी पृष्ठभूमि किस सीमातक देश-काल का सही वातावरण और लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है।"[१] देशकाल के अंतर्गत किसी देश या समाज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन, समाज की कुरीतियाँ एवं विशेषाताएँ आदि समझी जाती है। देश-काल में स्थानीय रंग होनेपर उपन्यास में प्रभावात्पकता आ जाती है। मगर देश-काल तथा वातावरण की सृष्टि करते समय एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है - देश-काल, वातावरण कथानक के स्पष्टीकरण में साधन ही रहे, साध्य न बन जाए।

देशकाल और परिस्थितियों के संदर्भ में पाठक पात्रों के कार्यकलापों का सही मूल्यांकन करता है। कथानक को वास्तविकता का आभास देने के साधनों में वातावरण मुख्य है। इसके लिए स्थानीय ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है। वर्णन में देश-विरुध्दता और कालविरुध्दता के दोषा नहीं होने चाहिए। देश-काल के चित्रण का वास्तविक उद्देश्य कथानक और चरित्र का स्पष्टीकरण है।

---

१ डा. प्रतापनारायण टण्डन -'हिंदी उपन्यास कला' - पृ.३०० ।

'गुनाहों का देवता' भारती जी का स्वतंत्रता प्राप्ति के समय का उपन्यास है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ही हिंदी उपन्यासों का मूल स्वर दासता से मुक्ति तथा प्राचीन संस्कारों और अंधविश्वासों को तोड़ना था। इस कारण सारे देश में एक बौध्दिक जागरण फैल रहा था। चित्रलेखा, दिव्या और त्यागपत्र उपन्यासों में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक धरातल पर मानव-मुक्ति के स्वर देखे जा सकते हैं। क्योंकि, यह वह युग था, जब देश के बुध्दिजीवी विश्व के विकासशील देशों के विचारों से प्रभाव-ग्रहण कर रहे थे। देश के स्वतंत्र होने के बाद विदेशी दासता से मुक्ति के प्रश्न और समस्याओं से मुक्ति दिलाने का कार्य अब भी शेष था। अत: स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिंदी उपन्यासों के कथावस्तु का मुख्य आधार बनी स्वाधीनता के बाद की परिस्थितियाँ। सांस्कृतिक क्षेत्र में नारी स्वाधीनता, समाज में नारी-पुरुष के संबंध, जाति-व्यवस्था से उत्पन्न समस्याएँ तथा आर्थिक विषमताओं से उत्पन्न अमानवीय स्थितियों की ओर लक्ष्य केन्द्रित किया। समाधान पाने के लिए हमारे साहित्यकारों को आर्थिक और सांस्कृतिक धरातलपर मुक्त रखने की विचारधारा को स्वर दिया। हमारे साहित्यकारों का दृष्टिकोण यथार्थवादी बन गया। हिंदी लेखन का यह वैचारिक परिवेश था।

तीन खण्डों और उपसंहार में विभाजित धर्मवीर भारती जी के 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की घटनाएँ सिर्फ डेढ़ साल की अवधि में घटित होती है।

देश-काल के गुण --

उपन्यास में देश-काल तथा वातावरण का चित्रण प्राय: कथा-काल और कथा-प्रकार की विशिष्टता के अनुसार चयन किया जाता है। उसमें निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं --

१) वर्णनात्मक सूक्ष्मता --

सभी प्रकार के वर्णनों की भाँति ही देश-काल और वातावरण सम्बन्धी वर्णन भी सूक्ष्म तथ्य परक होने चाहिए। क्योंकि उनकी विश्वसनीयता तथा कलात्मकता की संभावनाएँ तभी उपजती है। वर्णन की सूक्ष्मता काल और वातावरण

के साथ प्रत्येक प्रकार से अनिवार्य रूप में संबंधित है क्योंकि यही वह तत्व है, जो पाठक के सामने युग और काल विशेष का सजीव चित्रण कर सकता है।

इस उपन्यास में हम कई जगहोंपर सूक्ष्म वर्णन देख सकते हैं जैसे -- उपन्यास के आरंभ में ही किया हुआ इलाहाबाद शहर का वर्णन, प्रकृति के मनोरम रूप का वर्णन, कॉलेज के वातावरण का वर्णन, चन्दर, सुधा के मनोविश्लेषण का वर्णन आदि में हम सुक्ष्म वर्णन देख सकते हैं। इन सुक्ष्म वर्णनों की वजह से ही हम पात्रों को अच्छी तरह से पहचानने में सफल होते हैं।

२) विश्वसनीय कल्पनात्मकता --

कथानक की सृष्टि का कल्पना जगत काल सापेक्ष होता है और जो कार्य या व्यापार या घटनाएँ उपन्यासकार चित्रित करता है, उन्हें वह काल के विश्वसनीय परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न कराता है। वस्तुतः, पूर्ण सफल तभी हो सकती है जब वह काल्पनिक होते हुए भी सच्चाई का बोध कराए। "धर्मवीर भारती जी का 'गुनाहों का देवता' यह उपन्यास सत्य घटनाओंपर आधारित है। ऐसा कहा जाता है, कि इलाहाबाद के उसी मुहल्ले में 'सुधा' आज भी जीवित है।"[१] फिर भी उपन्यासकार ने चन्दरद्वारा बिनती को अपना लिये जाने के लिए उपन्यास में सुधा की मौत की कल्पना की है। परंतु वह कल्पना इतनी सच्ची लगती है कि, उससे उपन्यास के सुखान्त बनने में बाधा नहीं पहुँचती।

३) उपकरणात्मक संतुलन --

कथानक का संबंध वातावरण के साथ और पात्रों का संबंध उनके कार्यकलाप, वार्तालाप और रीति विचार के कारण किसी-न-किसी युग विशेष से रहता है और उस युग विशेष का वातावरण इसी तत्व के माध्यम से उपस्थित किया जाता है। सुधा की मौत के पहले लेखक ने जो वातावरण निर्मिती की है वह उपकरणात्मक संतुलन का उत्कृष्ट उदाहरण है --

---

१ डा. पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' -पृ. ११।

"बड़ा भयानक दिन था। बहुत ऊँची छत का कमरा, दालनों में टाट के परदे पड़े थे। और बाहर गरमी की भयानक लू हू-हू करती हुई दानवों की तरह मुँह फाड़ दौड़ रही थी।" [१]

इस प्रकार हम देखते हैं कि, 'गुनाहों का देवता' में देश-काल तथा वातावरण के सभी गुणों का समुचित निर्वाह किया गया है। इन गुणों के रूप उपन्यास में यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं।

देश-काल के भेद --

देश-काल के गुणों के साथ-साथ उसके सभी भेद पृथक-पृथक रूप से क्षेत्रीय महत्व रखते हैं। देश काल को प्राय: वातावरण का बाह्य प्रकार कहा जाता है --

१) सामाजिक।

२) प्राकृतिक ।

३) ऐतिहासिक।

सामाजिक --

सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले सभी वर्णन इसमें आते है। जैसे -- वेशभूषा, रीति-रिवाज, सामाजिक वर्ग, शिक्षा, व्यापार, संस्कृति आदि।

प्राकृतिक --

इसके अंतर्गत उपन्यासकार कथा के पात्रों के सुख-दु:ख के साथ प्रकृति की समता विषमता को भी प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक --

इसमें देशकाल के विधान में अधिक सतर्क रहना पड़ता है। इस दृष्टि से इसमें मुख्य बात यह रहती है कि, काल-दोष न आने पायें, साथ ही कोई वर्णन इतिहास विरुध्द भी न हो जाए।

१. डा. धर्मवीर भारती -- 'गुनाहों का देवता' पृ. ३४५।

'गुनाहों का देवता' में देश-काल का तात्त्विक विवेचन --

१ 'गुनाहों का देवता' में राजनीतिक स्थिति --

भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के समय लिखे इस उपन्यास में राजनीतिक जीवन का कहीं भी संकेत नहीं आया है। यह मध्यवर्गीय जीवन की एक प्रेमकहानी है। राजनीतिक माहौल इसमें नहीं दर्शाया गया है। उपन्यास कार ने उपन्यास के प्रमुख पात्र चंदर के माध्यम से राजनीति के प्रति असंतोष व्यक्त कर दिया है।

२ सामाजिक स्थिति --

जब यह उपन्यास लिखा गया तो पढ़े लिखे लोग भी ब्याह शादी के बारे में डा. शुक्ला की तरह विचार रखते थे - "ब्याह-शादी को कम-से-कम मैं भावना की दृष्टि से नहीं देखता। यह एक सामाजिक तथ्य है और उसी दृष्टिकोण से हमें देखना चाहिए। शादी में सबसे बड़ी बात होती है, सांस्कृतिक समानता। और जब अलग-अलग जाति में अलग-अलग रीति-रिवाजें हैं तो एक जाति की लड़की दूसरी जाति में जाकर कभी भी अपने को ठीक से संतुलित नहीं कर सकती और फिर एक बनिया की व्यापारिक प्रवृत्तियों की लड़की और अध्ययन वृत्ति का एक ब्राह्मण लड़का, इनकी संतान न इधर विकास कर सकती है न उधर। यह तो सामाजिक व्यवस्था को व्यर्थ के लिए असन्तुलित करना हुआ।"[१] अन्य भी कई उदाहरणों के द्वारा लेखक ने उस समय की सामाजिक स्थिति का परिचय हमें कराया है।

३) शैक्षिक चित्रण --

स्वाधीनता प्राप्ति के समय कुछ-कुछ कॉलेज खुल चुके थे और लड़कियाँ भी कॉलेज में पढ़ने जाती थी। लेकिन फिर भी वे युनिवर्सिटी में सिर्फ इसलिए नहीं

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ५२।

पढ़ सकती थी कि, वहाँ लड़के पढ़ते है । इस उपन्यास में भी 'राजा कॉलेज' का जिक्र आया है । लड़कियाँ यहाँ पढ़ने आती थी, कभी-कभी अध्यापकों को तंग करती थी, शरारतें करती और क्लास से भाग जाती थी । उपन्यास का नायक अर्थशास्त्र में एम. ए. कर पी, एच्. डी. कर लेता है । डा. शुक्ला गवर्नमेन्ट साईकोलॉजिकल ब्यूरो में है और सुधा और बिनती को पढ़ाने आनेवाले मास्टरजी भी एम. ए. हिन्दी में पढ रहे हैं । इस प्रकार यहाँ शैक्षिक माहौल का चित्रण उपन्यासकार ने किया है और उस समय की शिक्षा पध्दतिपर प्रकाश डाला है ।

४) पारिवारिक सम्बन्ध --

यह उपन्यास जब लिखा गया तब की पारिवारिक स्थिति और आज की पारिवारिक स्थिति इन दोनों में काफी अंतर आ गया है । उस वक्त परिवार में बुजुर्ग नोकरों को भी सम्मान दिया जाता था । उपन्यास में हम देखते है कि, महाराजिन भी सुधा को डाँट लेती है -- "अच्छा ए चलो ओहर । एत्ती बड़ी बिटिया हो गयी, मारे दुलार के बररानी जात है ।" [१]

इसके साथ ही यहाँ कुछ ऐसे सम्बन्धों का भी जिक्र आया है कि, जिससे हमें पता चलता है कि, खून के रिश्ते-नातों से भी बढ़कर भी कुछ रिश्ते-नाते हो सकते हैं । चंदर अपनी सौतेली माँ से झगड़ कर घर से बाहर निकलता है और उसकी सौतेली माँ चाहती ही नहीं कि, वह घर लौटे । लेकिन इधर उसके खून के रिश्तेदार न होकर भी डा. शुक्ला ने उसे अपने बेटे से बढ़ कर माना है, उसकी मदद की है । सुधा और चंदर का रिश्ता भी ऐसा ही है कि, जिसे कोई नाम हम नहीं दे पाते हैं ।

५) ग्राम्य संस्कृति --

इस उपन्यास में कई ऐसी बातों का जिक्र आया है जिसमें ग्राम्य संस्कृति की झलक हम पाते है । जैसे - सुधा जब गाँव में अपनी बुआ के पास थी और जब वह

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ५५ ।

१३ साल की हुई थी तब से गाँववालों ने उसकी जल्दी शादी करने पर जोर देना शुरु किया था । बिनती की भी उम्र बढ़ने लगी तो उसका भी शादी के लिए जोर देना शुरु कर दिया, जिससे हम गाँव की लड़कियों की जल्दी शादी कर देने की प्रथा से अवगत हो जाते हैं। इसके साथ ही इस उपन्यास में जितनी भी रूढ़ी-परंपराएँ आदि का चित्रण किया है, वह गाँव में प्रचलित थीं । अज्ञान के कारण बिनती की माँ बिनती के पिता की मौत का कारण बिनती को ही मानती है । अनपढ़ लोग शिक्षा का फर्क तक नहीं समझाते हैं। यहाँ बिनती को देखने आये दुबे जी कहते हैं -- "ई तो भगवान ऐसा जोड़ मिला इन हैं कि, वर पक्षा अउर कन्यापक्षा दुइन के मामा बड़े ज्ञानी हैं। आप है तौन कॉलेज में पुरफेसर और ओहर हमार सार, लड़का केर मामौ जौन है तौन डाकघर में मुन्सी है, आप की किरपा से ।" [१]
इन सभी में ग्रामीण संस्कृति की एक झलक हमें देखने मिलती है ।

६) अन्धश्रध्दा --

इस उपन्यास में समाज में प्रचलित कई अंधश्रध्दाओं का उल्लेख आया है । जैसे - बड़ी बहन की शादी से पहले छोटी की शादी करना अच्छा नहीं समझा जाता है, इसलिए बिनती की शादी सुधा की शादी के लिए अगहन-पूस तक टाल दी जाती है । साथ ही बिनती द्वारा चन्दर को यह कहना कि, "देवताओं की पलकें कभी नहीं गिरती ।"[२] यह भी तो अंधश्रध्दा का ही एक रूप है । सिर्फ गाँव के लोग ही छूत-छात मानते है, ऐसी बात नहीं है बल्कि डा. शुक्ला जैसे पढ़े-लिखे लोग भी छूत-छात मानते है - "सुधा एक रेशमी सलिया पहने चौके के अंदर सो रही थी और चन्दर चौके के बाहर । सुबह के कच्चे खाने में डा. शुक्ला बहुत छूत-छात का विचार रखते थे ।"[३] अंधश्रध्दा के अन्य कई रूप भी हम इस उपन्यास में देख सकते है ।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ९० ।
२ वही वही पृ. १३२ ।
३ वही वही पृ. १३२ ।

७) दहेज समस्या --

इस उपन्यास में दहेज के दो रूपों को चित्रित किया गया है। बिनती की शादी तय करने के लिए आये दुबे जी जब शादी को अगहन-पूस तक टाल देने की बात सुनते हैं तो पहले अचरज में पड़ जाते हैं और इस शर्तपर तैयार होते हैं कि, अगहन तक हर तीज-त्यौहार के लिए लड़के के लिए कुरता-धोती का कपड़ा और ग्यारह रूपये नजराना जाएगा। और अगहन में अगर ब्याह हो रहा है तो सास, ननद और जिठानी के लिए गरम साडी जाएगी और जब-जब दुबे जी गंगा नहाने प्रयागराज आयेंगे तो उनका रोचना एक थाल कपड़े और एक स्वर्णमंडित जौ से होगा। इस प्रकार शादी से पहले स्पष्ट रूप में दहेज मॉगने वाले आदमी, एक दुबे जी ही हैं। वही दूसरी ओर आधुनिक विचार रखनेवाले, स्पष्ट रूप में नहीं बल्कि, अन्य मार्गों से दहेज मॉगनेवाले शंकरबाबू और कैलाश हैं। डा. शुक्ला चन्दर को बताते हैं कि "उसने लिखा है सिर्फ दस आदमी बारात में आवेंगे, एक दिन रुकेंगे। संस्कार के बाद चले जायेंगे। सिवा लड़की के गहने कपड़े और लड़के के गहने-कपड़े के और कुछ भी स्वीकार न करेंगे।"[१] इस प्रकार दहेज मॉगने की दो अलग पध्दतियों को यहॉ दर्शाया गया है।

८) धार्मिक स्थिति --

जिस काल में यह उपन्यास लिखा गया है उस काल में समाज मानसपर, धर्म का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। चाहे थोडे रूप में क्यों न हो, छूत-छात का भी प्रभाव नजर आता है। इस उपन्यास में कई धर्मों के पात्र है या कई धर्मोंपर विचार प्रकट हुए हैं। कुछ विचार पात्रों के द्वारा प्रकट हुए है तो कुछ विचार लेखक द्वारा प्रकट हुए है, तो कुछ कहानियों के दवारा प्रकट हुए है। जैसे - पम्मी के चले जाने के बाद सुधा जब उसके बारे में सोचने लगती है तो पहली मुलाकात में ही वह समझा जाती है कि, वह स्वच्छंद है। साथ ही वह यह भी सोचती है कि, इसाई लडकियॉ स्वच्छंद होती ही है। इसमें एक जगह पर बाइबल की सेलामी और हैराद की कहानी

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ. १२५।

को जिक्र आया है और साथ ही ब्रह्मा और उनकी कन्या की कहानी का जिक्र आया है पम्मी की कहानी समाप्त होते-होते उसने खुद इसाई होकर भी हिंदुओं के विवाह संस्कारों को, विवाह के स्थायीत्व को उपयुक्त माना है। हिन्दु नारी के जीवन में पूजा-पाठ का महत्व अनन्य साधारण है। उसको बताते हुए सुधा कहती है -- "हिन्दू नारी इतनी असहाय होती है, उसे पति से, पुत्र से, सभी से लांछन, अपमान और तिरस्कार मिलता है कि, पूजा-पाठ न हो तो पशु बन जाय। पूजा-पाठ ही ने हिन्दू नारी का चरित्र अभी तक इतना उँचा रखा है।" [१] इसी के साथ ही गैसू के निकाह की जानकारी भी दी गयी है -"गैसू गरमियाँ बीताने नैनीताल जा रही है, वहीं अख्तर की अम्मी भी आयेंगी और मंगनी की रस्म वहीं पूरी करेंगी। अब वह पढ़ेगी नहीं। जुलाई तक उसका निकाह हो जाएगा।" [२] इस प्रकार हम देखते हैं कि, उस समय के समाज में प्रचलित धर्म के रूपों को इस उपन्यास में उपन्यासकार ने दिखाया है।

९) <u>रीति-रिवाज</u> --

उपन्यासकार ने उपन्यास के आरंभ में डा. शुक्ला का यह कथन दिखाया है -- "फिर हमारे भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं को तो बहुत ही सावधानी से समझने की आवश्यकता है। यह समझ लो कि, मानव-जाति दुर्बल नहीं है। अपने विकास क्रम में वह उन्हीं संस्थाओं, रीति-रिवाजों और परम्पराओं को रहने देती है जो उसके अस्तित्व के लिए बहुत आवश्यक होती।" [३] और जब चन्दर अन्तर्जातिय विवाह की बात करता है तो वे कहते हैं -"जब अलग-अलग जाति में अलग-अलग रीति-रिवाज है तो एक जाति की लड़की दूसरी जाति में जाकर कभी भी अपने को ठीक से संतुलित नहीं कर सकती।" [४] लेकिन यही डा. शुक्ला अंत में यह भी स्वीकार करते हैं - "चन्दर इस महिने भर में मेरा सारा विश्वास हिल गया। सुधा

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ३१२।

२ वही वही पृ. १३०।

३ वही वही पृ. ५१।

४ वही वही पृ. ५२।

का विवाह कितनी अच्छी जगह किया, मगर सुधा पीली पड़ गयी है। कितना दु:ख हुआ देखकर। और बिनती के साथ यह हुआ। सचमुच जाति, विवाह, सभी परंपराएँ बहुत ही बुरी है। बुरी तरह सड़ गई है। उन्हें तो काट फेंकना चाहिए।"[१] इस उपन्यास में कई रीतियों का, रस्मों का, रिवाजों का उल्लेख आया है। जैसे - ब्याह तय कर जाते वक्त लड़केवालों की ओर से लड़की को कुछ-न-कुछ भेंट के रूप में देना - कैलाश के बड़े भाई शंकर बाबू भी सुधा के लिए मोतियों की माला देते हैं और फिर भी वे कहते है कि, "हम लोग रीति-रस्म के कायल नहीं है।"[२]

१०) इलाहाबाद का वर्णन ----

इस उपन्यास का परिवेश इलाहाबाद का रोमानी वातावरण है। लेखक मानता है कि, इस नगर का देवता जरूर कोई रोमैण्टिक कलाकार है क्योंकि, इस नगर की जिन्दगी में बँधे-बँधाए नियम न होकर एक स्वच्छन्द खुलाव है। न तो इस नगर की बनावट में कोई नियम और क्रम दिखाई देता है और न ही इसके मौसम में। सुबहें मलयजी, दोपहरें अंगारी तो शामें रेशमी। लगता है प्रयाग का नगर-देवता स्वर्ण कुंजों से निर्धारित कोई मनमौजी कलाकार है जिसके सृजन में हर रंग के डोरे हैं। भारती महसूस करते हैं कि, चाहे सिविल लाइन्स हो, चाहे अल्फ्रेड पार्क और चाहें गंगा तट हो, लगता है कि, हवा एक नटखट दोशीजा की तरह कलियों के आँचल और लहरों के मिजाज से छेड़खानी करती चलती है।

एक और स्थानपर भी इलाहाबाद का वर्णन इस तरह से आया है -- "बरसात में इलाहाबाद की सिविल लाइन्स का सौन्दर्य और भी निखर आता है। रूखे-सूखे फूटपाथों और मैदानोंपर घास जम जाती हैं, बंगले की उजाड़ चहारदीवारियाँ तक हरी-भरी हो जाती है। लम्बे और घने पेड़ और झाड़ियाँ निखरकर, धुलकर हरे मखमली रंग की हो जाती हैं और कोलतार की सड़कोपर थोड़ी-थोड़ी पानी की चादर-सी लहरा उठती है जिसमें पेड़ों की हरी छायाएँ बिछ जाती है।"[३]

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २५१।

२ वही वही पृ. २९६।

३ वही वही पृ. २०७।

इस उपन्यास की कथा प्रयाग, इलाहाबाद में घटित हुई है केवल अंतिम अंश दिल्ली में घटित हुआ है। इसकी घटनाएँ आमतौरपर शामों में घटित हुई हैं। इसके साथ ही इसमें चन्दर के परताबगढ़ से प्रयाग आने, बुआजी के बरेली में रहने और वृंदावन और कानपूर जाने का उल्लेख आया है। पम्मी और बर्टी की कथा के संदर्भ में मसूरी और रावलपिण्डी का उल्लेख भी आया है। इस प्रकार उपन्यासकार ने जिस परिवेश को उपन्यास में चित्रित किया है, उसका चित्रण बखूबी किया है।

११) प्रकृति वर्णन --

इस उपन्यास में उपन्यासकार भारती जी ने कई जगहों पर प्रकृति के मनोरम रूपों को दर्शाया है। जैसे - "सुधा का कॉलेज बड़ा एकान्त और खूबसूरत जगह बना हुआ था। दोनों ओर ऊँची-सी मेंड और बीच में से एक कंकड़ की खूबसूरत घुमावदार सड़क। दायीं ओर चने और गेहूँ के खेत, बेर और शहतूत के झाड़ और बायीं ओर ऊँचे-ऊँचे टीले और ताड़ के लम्बे-लम्बे पेड।"[१] एक दोपहर का वर्णन लेखन ने इस प्रकार किया है - "आसमान में कुछ हलके रूपहले बादल उड़ रहे थे और जमीन पर बादलों की साँवली छायाओं का खेल बड़ा मासूम लग रहा था।"[२] लेखक ने मैकफर्सन लेक का भी सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा है। एक और जगह पर प्रकृति के सुन्दर रूप को लेखक ने इस तरह दिखाया है -- "मानसून के दिनों में अगर कभी गौर किया हो तो बारिश होने से पहले ही हवा में एक नमी, पत्तियोंपर एक हरियाली और मन में एक उमंग-सी छा जाती है। आसमान का रंग बतला देता है कि, बादल छानेवाले है, बूँदे गिरानेवाली है। जब बादल बहुत नजदीक आ जाते है, बूँदे पड़ने के पहले ही दूरपर गिरती बूँदों की आवाज वातावरणपर छा जाती है, जिसे धुरवाँ कहते है।"[३] इस प्रकार इस उपन्यास में प्रकृति के कई रूपों को चित्रित किया गया है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ३२।

२ वही वही पृ. ३७।

३ वही वही पृ. २९६।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, देश-काल वातावरण को इस उपन्यास में ज्यादा महत्व नहीं दिया गया है। लेखक का ध्यान देश-काल के वर्णन की ओर विशेष नही रहा है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन की प्रेमकहानी होने के कारण इसमें वे समस्याएँ नहीं उठाई गयी हैं जो आजादी के पहले और बाद में भी मध्यवर्गीय मनुष्य के जीवन-सम्बन्धों को आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक धरातलपर उसके बेहतर जीवन के लिए प्रश्न बनी खड़ी थी। अत: इसे प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्र और छात्राओं के स्वच्छंद वातावरण और उस नगर के पार्कों में रंग-बिरंगी फूलों के बीच पलनेवाली किशोर जीवन की प्रेम कहानी कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। इसलिए इसका परिवेश इसकी कथावस्तु के अनुरूप ही चुना गया है। इसलिए मेरी दृष्टि में देश-काल तथा वातावरण की दृष्टि से यह उपन्यास सफल है।